खंड-4, अंक-4 आषाढ़-भाद्रपद 2078 / त्रैमासिक / जुलाई-सितंबर वर्ष-2021

स्वामित्व © : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

संपादकीय कार्यालय : अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान,
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282005
ईमेल- pravasijagat.khsagra17@gmail.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत – प्रति अंक ₹ 40/–, वार्षिक – ₹ 150/–
संस्थागत – वार्षिक शुल्क ₹ 250/–
(डाक व्यय प्रति अंक ₹ 35/– तथा
वार्षिक ₹ 100/– अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक $ 10, वार्षिक $ 40

आवरण डिजायन : डॉ. विजय एम. ढोरे, केंद्रीय हिंदी संस्थान

मुद्रक : राष्ट्रभाषा ऑफसेट प्रेस, आगरा

'प्रवासी जगत' में लेखों/रचनाओं में व्यक्त विचार/तथ्य लेखकों द्वारा प्रस्तुत हैं। पत्रिका में प्रकाशित लेख/सूचना-सामग्री से संपादक मंडल या संस्थान का सहमत होना आवश्यक एवं अनिवार्य नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक/प्रकाशक से अनुमति लेना आवश्यक है। समस्त न्यायिक विवाद आगरा न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय होंगे।

संस्थान वेबसाइट : www.khsindia.org

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख का नाम	लेखक का नाम	पृ०सं०
•	प्रधान संपादकीय	बीना शर्मा	5
•	संपादकीय	जोगेन्द्र सिंह मीना	7-8
1.	सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' का साहित्यिक अवदान	नवीन नंदवाना	9-18
2.	बीरसेन जागासिंह से डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा की बातचीत	विमलेश कान्ति वर्मा	19-33
3.	दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीय और हिंदी	दीप्ति अग्रवाल	34-63
4.	प्रवासी पंजाबी उपन्यास में सांस्कृतिक अंतर्विरोध	अमरसिंह वधान	64-78
5.	प्रवासी हिंदी-साहित्य के संकट	श्रीनिवास त्यागी	79-85
6.	सुषम बेदी के कथा-साहित्य में प्रवासी भारतीय समाज के विविध पक्ष	दिनेश कुमार गुप्ता	86-103
7.	उधड़ते हुए संबंधों को टोहते हुए: तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ	शैलजा	104-109
8.	आकर्षक है प्रवासी हिंदी कहानी का चेहरा	महेश दर्पण	110-123
9.	प्रवासी साहित्य के स्तंभ: गिरिराज किशोर एवं अभिमन्यु अनत	सुनील कुमार शॉ	124-130
10.	'सवेरा' उपन्यास में अभिव्यक्त प्रवासी संवेदनाएँ	सुभाषिनी सरीन लता	131-140

11.	हिंदी साहित्य का फैलता फलक प्रवासी साहित्य	सरोजिनी नौटियाल	141-148
12.	'ढलते सूरज की रोशनी': मॉरीशसीय समाज का आईना	नूतन पाण्डेय	149-162
13.	तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में भाव एवं विचारों का सौंदर्य	दत्ता कोल्हारे	163-167
14.	पुष्पिता अवस्थी कृत 'छिन्नमूल' उपन्यास में गिरमिटिया कृषकों की वेदना	अकरम हुसैन	168-172

- लेखकों के नाम और पते
- सदस्यता फार्म

❑❑

प्रधान संपादकीय

'प्रवासी जगत' पत्रिका विश्व भर में फैले उन प्रवासियों के मन को उकेरती है जो अपना देश, अपनी भूमि छोड़ किसी दूसरे देश में जा बसते हैं, जा बसना उनकी स्वेच्छा अथवा विवशता हो सकती है। इस क्रम में वे वहाँ की संस्कृति में रचने बसने का यत्न भी करते हैं। वे वहाँ के लोगों से मेल-जोल बढ़ाते हैं। कभी-कभी उन्हें इस प्रयास में सफलता भी मिलती है। सब कुछ करते हुए भी वे अपनी जड़, अपनी जमीन, अपना देश नहीं भुला पाते। क्योंकि ये जड़ें कहीं गहरे रची बसी होती हैं इनका प्रसार बहुत अधिक होता है। विदेश में रचते-बसते उनके रचनाकर्म कितने भी विस्तृत क्यों न हों पर अपने मूल रूप में उन देशज संदर्भों से जुड़े होते हैं जो उनकी नस-नस में व्याप्त है, संस्कृतियों की बुनावट है और वे छोटे-छोटे प्रसंग उनकी अनुभव संपदा बन चुके होते हैं। यही अनुभव संपदा उनके विभिन्न रचनाकारों में यथा लेख, कविता, कहानी, उपन्यास आदि में विकीर्ण होती है। प्रवासी रचनाकारों के अनुभव संपन्न लेखों को संग्रहित कर 'प्रवासी जगत' पत्रिका का एक खूबसूरत अंक तैयार हो जाता है।

प्रस्तुत अंक की बात करें तो इसके आभोग में डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल का साहित्यिक अवदान है, दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों के जीवन संदर्भ हैं, सुषम बेदी के कथा-साहित्य की विवेचना है, तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों की जाँच पड़ताल है, फीजी के जोगिन्द्र सिंह कंवल की कृति 'सवेरा' में प्रवासियों की संवेदनाएँ हैं, मॉरीशस कृषकों की वेदना है और ये सब अपने पूर्ण रूप में संवेदनाओं के विस्तार के साथ अक्षरशः अपनी उपस्थिति का भान कराते हैं। कुल मिलाकर इस अंक में 14 आलेख हैं जो संख्या में दो अंक के भले दिखते हों लेकिन प्रवासियों के जीवन जगत की एक विस्तृत झांकी प्रस्तुत करते हैं। कहन बतरावन को अंक में संपादित कर संपादक का गठीला वक्तव्य, सह संपादक का सहयोग और प्रकाशन प्रबंधक की अपनी टीम के साथ सक्रियता बहुत उल्लेखनीय है। सबको बहुत-बहुत बधाई।

हमेशा की तरह पाठकों की प्रतिक्रियाओं की की प्रतीक्षा रहेगी जिससे अगले अंक में वह सब समेटा जा सके जिसे देखने और पढ़ने की उत्सुकता साहित्य जगत में है। सभी को पुनः बधाई एवं शुभकामनाएँ।

बीना

(प्रो. बीना शर्मा)
निदेशक

शॉ ने प्रवासी साहित्यकार गिरिराज किशोर और अभिमन्यु अनत के साहित्य में प्रवासी गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति को वर्णित किया है। सुभाषिनी सरीन लता ने फ़ीजी के प्रवासी साहित्यकार जोगिन्द्र सिंह कंवल के उपन्यासों में व्याप्त संवेदना को अभिव्यक्त किया है। सरोजिनी नौटियाल ने प्रवासी हिंदी साहित्य के विस्तृत फलक पर विचार-मंथन किया है। डॉ. नूतन पाण्डेय ने मॉरीशस के प्रवासी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के साहित्य को मॉरीशसीय समाज का आईना बताया है। मॉरीशस की सामाजिक स्थिति को समझने के लिए रामदेव धुरंधर का साहित्य एक माध्यम बन सकता है। डॉ. दत्ता कोल्हारे ने तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में भाव एवं विचारों के समन्वय पर प्रकाश डाला है। पुष्पिता अवस्थी के 'छिन्नमूल' उपन्यास में गिरमिटिया कृषकों की वेदना को श्री अकरम हुसैन ने उद्घाटित किया है!

इस अंक की सामग्री प्रवासी जगत के रचनाकारों और उनकी रचनाओं में व्याप्त संवेदना को उद्घाटित करने में समर्थ है। अलग-अलग पृष्ठभूमि के भारतीय प्रवासियों के कल और आज को समझने के लिए पत्रिका का यह अंक उपयोगी सिद्ध होगा। इस अंक के सभी आलेख लेखकों को बधाई और आभार। यह अंक संपादक, सह-संपादक और विभाग के सभी सदस्यों के सामूहिक प्रयास का फल है। सह-संपादक के रूप में डॉ. मयंक का योगदान विशेष तौर पर महत्वपूर्ण है।

'प्रवासी जगत' पत्रिका के अंकों को आकार देने के दौरान यह प्रयास किया जाता है कि इसमें गिरमिटिया प्रवासी साहित्यकारों के साहित्य को अधिक से अधिक स्थान मिल सके। यही प्रयास शोधालेख लेखकों के संबंध में भी रहता है। जो शोधालेख प्रवासी लेखकों द्वारा प्राप्त होते हैं, उन्हें पत्रिका में प्राथमिकता प्रदान की जाती है। प्रवासी और भारतीय शोधालेख लेखकों से संपादक मंडल की अपेक्षा रहती है कि वे ऐसे गिरमिटिया प्रवासी साहित्यकारों के साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए शोधालेख लिखें, जो प्रवासी हिंदी साहित्य की मुख्य धारा से छूटे हुए हैं। साथ ही नये उभरते हुए प्रवासी साहित्यकारों के साहित्य को प्रकाश में लाना पत्रिका का उद्देश्य है।

अंत में आशा है आप सभी को पत्रिका का यह अंक पसंद आएगा। केंद्रीय हिंदी संस्थान और संपादक मंडल आपकी प्रतिक्रियाओं और सुझावों का सदैव स्वागत करता है।

डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीना
संपादक

सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' का साहित्यिक अवदान

नवीन नंदवाना

आज के हिंदी जगत में विविध विमर्शों की चर्चा के बाद पिछले कुछ वर्षों में नए-नए विषय उभर कर आए। ऐसे ही प्रमुख विषयों में हिंदी का प्रवासी साहित्य और साहित्यकार भी एक प्रमुख विषय है। आज प्रवासी साहित्य को लेकर बहुत विचार-मंथन हो रहा है। अमेरिका, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, मॉरिशस जैसे देशों में निवासरत हिंदी के प्रवासी रचनाकारों पर हिंदी जगत में काफी कुछ लिखा-पढ़ा जा रहा है किंतु इस चर्चा में कई ऐसे देश और साहित्यकार हमारी नज़र से छूट रहे हैं, जिन पर भी बात होनी चाहिए। छोटे देशों में बसकर हिंदी की सेवा कर रहे रचनाकारों के अवदान की चर्चा से या तो हम चूक जा रहे हैं या फिर थोड़ा-सा स्मरण कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ रहे हैं। प्रस्तुत आलेख में मैंने नार्वे में बसे प्रवासी साहित्यकार डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' के साहित्यिक अवदान और उनके द्वारा की जा रही हिंदी सेवा को आधार बनाया है।

डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' का जन्म 10 फरवरी, 1954 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपके पिता का नाम स्व. श्री बृजमोहन लाल शुक्ल और माता का नाम स्व. श्रीमती किशोरी देवी शुक्ल है। अध्ययन के प्रति विशेष रुचि रखने वाले इस रचनाकार की विद्यालयी शिक्षा लखनऊ में हुई। वहीं इंटरमीडिएट परीक्षा डी.ए.वी. इंटर कालेज, लखनऊ से उत्तीर्ण की। 'शरद आलोक' ने स्नातक की उपधि बी.एस.एन.बी.वी. डिग्री कॉलेज, लखनऊ यूनिवर्सिटी से प्राप्त की। आप श्रमिक शिक्षक, श्रमायुक्त विभाग, कानपुर, (उ.प्र.) से भी जुड़े रहे। पढ़ने-लिखने में रुचि रखने वाले 'शरद आलोक' का यह क्रम केवल भारत की भूमि तक ही रुक गया हो ऐसा नहीं है। नार्वे जाने के बाद भी आपका यह क्रम निरंतर जारी रहा। वहाँ पहुँचने के बाद आपने नेशनल कॉलेज ऑफ जर्नलिज़्म, ओस्लो, नार्वे से जर्नलिज़्म में डिप्लोमा किया। साथ ही नार्वेजीय साहित्य, चुना हुआ स्कैंडिनेवियायी (स्कैंडिवियन) साहित्य और नार्वेजियन फोनेटिक विषय को आधार बनाकर ओस्लो यूनिवर्सिटी, नार्वे से अपने इस अध्ययन को जारी रखा।

संप्रति आप अध्ययन-अध्यापन से जुड़े हुए हैं। आप ओस्लो यूनिवर्सिटी और कोपेनहेगन यूनिवर्सिटी में अतिथि अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। न केवल अध्यापन बल्कि आप पत्रकारिता से भी सक्रियता से जुड़े हैं। आप वर्तमान में एक पत्रकार-लेखक के रूप में 'आकेर्स आवीस ग्रुरुददालेन' (Akers avis Groruddalen, Oslo) तथा भारत के समाचार पत्रों विशेष रूप से 'देशबंधु', 'राष्ट्रीय दैनिक', नई दिल्ली के यूरोप के संपादक के रूप में भी अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। विगत कई वर्षों से आपके संपादन में 'स्पाइल-दर्पण' नामक द्वैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी जारी है। इस प्रकार हम आपके उक्त कार्यों से आपकी अध्ययन-अध्यापन और पत्रकारिता के प्रति विशेष रुचि को देख सकते हैं।

आप वर्तमान में 'भारतीय-नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम', नार्वे तथा 'इंडो-यूरोपियन आर्ट कौंसिल (भारतीय-यूरोपीय आर्ट कौंसिल)' के अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। साथ ही आप हिंदी स्कूल, वाइतवेत, ओस्लो, नार्वे तथा वैश्विका, साप्ताहिक, लखनऊ, उ.प्र. भारत के संस्थापक भी हैं। इनके अलावा सनराइज रेडियो (Radio-ti) कोपेनहेगन, डेनमार्क और देश-विदेश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आप सलाहकार के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं। इस प्रकार आप एक अध्यापक, एक पत्रकार, एक संपादक, एक सलाहकार आदि के रूप में भारत तथा नार्वे और अन्य देशों के साहित्य को सहयोग देकर हिंदी के प्रसार-प्रसार और उसके वैश्विक स्वरूप निर्माण में अपना विशेष योगदान दे रहे हैं।

एक साहित्यकार के रूप में भी डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' का उल्लेखनीय योगदान रहा है। आपने हिंदी की विभिन्न विधाओं यथा- कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी कलम चलाई है। आपने हिंदी और नार्वेजीय भाषा दोनों में काव्य लेखन किया है। एक प्रवासी रचनाकार के हृदय में सदैव भारत बसता है। अत: हम देखते हैं कि डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने भी नार्वेजीयन की तुलना में हिंदी में व्यापक रूप से लिखा है।

आपकी हिंदी में मुख्य काव्य-कृतियाँ 'वेदना', 'रजनी', 'नंगे पाँवों का सुख', 'दीप जो बुझते नहीं', 'संभावनाओं की तलाश', 'नीड़ में फँसे पंख', 'गंगा से ग्लोमा तक', 'प्रवासी का अंतर्द्वंद्व' और 'लॉकडाउन' हैं। वहीं नार्वेजीय भाषा में आपके 'फ्रेममेद फ्यूगलेर' और 'मेल्लुम लिनयेने' नामक दो संग्रह प्रकाशित हुए। आप इन दिनों 'गंगा की वापसी' नाम से उपन्यास की रचना में भी संलग्न हैं। आपके कहानी संग्रहों में 'तारूफी खत', 'अर्धरात्रि का सूरज' और 'सरहदों के पार' हैं। आपने 'अंतर्मन के रास्ते', 'अतंत:', 'वापसी', 'आधीरात का सूरज', 'डेथ ट्रैप', 'सरहदों के पार' शीर्षक से नाटकों की रचना

की। ये नाटक अभी प्रकाशित तो नहीं हुए पर यत्र-तत्र इनका मंचन अवश्य हुआ है। 'सागर पास की दुनिया' आपका चर्चित यात्रा वृत्तांत है। विदेश की धरा पर रहकर आपने अनुवाद कार्य में भी अपनी कलम को गति प्रदान की। आपने नार्वे की लोककथाएँ, एच.सी. अंदर्ससन (डेनमार्क) की कथाएँ, हेनरिक इबसेन कृत नार्वेजीय नाटक : गुड़िया का घर, मुर्गाबी, समुद्र की औरत, क्नुत हामसुन कृत उपन्यास : 'भूख' का मूल भाषा से हिंदी में अनुवाद किया। साथ ही आपने 'प्रतिनिधि प्रवासी कहानियाँ', 'नार्वे की उर्दू कहानियाँ', 'स्कैंडिनेविया' (नार्वे, स्वीडेन और डेनमार्क) के हिंदी काव्य का संकलन और संपादन का कार्य भी किया है। आप वर्तमान में भी कथा और कविता आदि को लेकर संकलन और संपादन के क्षेत्र में कार्यरत हैं। वर्तमान में इस दिशा में आप जो कार्य कर रहे हैं, वह इस प्रकार है- 'कथा साहित्य' (कार्यरत), नार्वेजीय कविताएँ' (कार्यरत), 'समसामयिक प्रवासी कहानियाँ (कार्यरत), 'बीसवीं सदी की प्रवासी कहानियाँ (कार्यरत)। आप संपादक के रूप में 'श्रमांचल', 'परिचय', 'वैश्विका' और 'स्पाइल-दर्पण' नामक पत्रिकाओं को अपना योगदान दे रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने हिंदी की विविध विधाओं में साधिकार लेखन किया है। वे हमारे समक्ष एक कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, यात्रावृत्तांतकार, संपादक और पत्रकार के रूप में आते हैं। इस प्रकार हिंदी का दीप विदेश की धरा पर जलाने वाले इस रचनाकार ने हिंदी की विविध विधाओं में लेखन कर हिंदी के मान-सम्मान को बढ़ाने में अपना विशेष योगदान दिया है।

हिंदी को दिए गए अपने विशेष योगदान के कारण डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' को हिंदी जगत ने कई पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा है। उनमें प्रथम ओस्लो इंटरनेशनल पोएट्री फेस्टिवल, ओस्लो, नार्वे (1985), नोर्डिक जर्नलिस्ट सेमिनार, ओरहूस डेनमार्क (1986), हिंदी संवाहक सम्मान, विश्व हिंदी समिति, न्यूयार्क, अमेरिका (1998), विदेशों में हिंदी भाषा और साहित्य सेवा के लिए सम्मान, हिंदी अकादमी दिल्ली (2000), नार्वेजीय लेखक यूनियन, ओस्लो, नार्वे (2001), हिंदी प्रचारक शताब्दी सम्मान, नाथद्वारा, राजस्थान (2009), उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, लखनऊ द्वारा सम्मानित (2013), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 2015 में विदेशों में हिंदी सेवा के लिए सम्मानित, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा 2015 में 'गंगा से ग्लोमा तक' काव्य संग्रह को भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार, म. प्र. सांस्कृतिक विभाग द्वारा 2015-2016 के लिए निर्मल वर्मा भाषा पुरस्कार, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री द्वारा उत्तर प्रदेश प्रवासी रत्न सम्मान-2017, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश द्वारा सेठ गोविंददास पुरस्कार, 2018, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, यू.एस.ए. द्वारा विश्व हिंदी सेवा सम्मान, 2019 आदि प्रमुख हैं। आपने विश्व हिंदी सम्मेलनों में भी अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई।

विशेष रूप से आपने चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस (1993), छठा विश्व हिंदी सम्मेलन, लंदन, यू.के. (1999) में भाग लिया।

यदि डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' की अन्य उपलब्धियों की बात की जाए तो हम देखते हैं कि आपको नार्वेजीय सरकार ने भी साहित्यिक योगदान के लिए बिएरके कल्चर पुरस्कार-2015 से सम्मानित किया। साथ ही आपने ओस्लो नगर पार्लियामेंट में 2004-2007 तक सदस्य के रूप में योगदान दिया। आप विगत 40 वर्षों से हिंदी साहित्य, भाषा और संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पिछले 32 वर्षों से आपके संपादन में प्रकाशित हो रही 'स्पाइल-दर्पण' नामक द्विभाषीय द्वैमासिक पत्रिका का ओस्लो से आप प्रकाशन एवं संपादन कर रहे हैं। इस पत्रिका के माध्यम से आप भारत और नार्वे के बीच सांस्कृतिक और साहित्यिक सेतु का निर्माण करने में सफल रहे हैं। आपकी रचनाओं पर लघु फिल्में भी बन चुकी हैं। देश-विदेश के विविध पाठ्यक्रमों में आपकी रचनाओं को स्थान मिला है।

पुरानी श्रमिक बस्ती, ऐशबाग, लखनऊ रचनाकार की कर्मभूमि रही है। अपनी बातों में वे वहाँ की ईदगाह को याद करते हुए हिंदी के ख्यातनाम रचनाकार मुंशी प्रेमचंद की चर्चित कहानी 'ईदगाह' का स्मरण भी करते हैं। रचनाकार के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें तो हम पाते हैं कि वे सदैव प्रगतिशील विचारों के पक्षधर रहे हैं। यहाँ वे एक संवाद में बताते हैं कि- "छोटे मनुआ मामा ने गाय के साथ बकरियाँ भी पाल रखी थीं। बकरियों के पालने के कारण कई असंतुष्ट लोग उनका विरोध यह कहकर करते थे कि देखो ब्राह्मण होकर बकरियाँ पालते हैं। मुझे लगा कि मनुआ मामा सही थे। इन्हीं दकियानूसी बातों के कारण ही हमारे पूर्वज न तो स्वयं उन्नति कर सके और न ही दूसरों को तरक्की करने दी होगी।"[1] यह हमें दर्शाता है कि लेखक इस बात के पक्षधर रहे हैं कि काम का जाति, धर्म या अन्य बातों से कोई सरोकार नहीं होता। यदि हमें प्रगति के पथ पर बढ़ना है तो उपलब्ध संसाधनों व रोजगार के अवसरों का लाभ लेना चाहिए।

विश्व जब कोरोना की महामारी से जूझ रहा था। ऐसे में हर ओर भय और दहशत का माहौल रहा, सब ओर एक चिंता फैली थी। हिंदी जगत में उस काल में कोरोना, क्वारेंटीन, लॉकडाउन शब्द बहुतायत में प्रयुक्त होने लगे। विषम वैश्विक परिस्थितियों में रचनाकार ने आपदा को अवसर में बदलने का कार्य किया। जब बाहर आवाजाही की सख्त मनाही थी, ऐसी विषम परिस्थितियों में डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने अपनी कलम को गति दी। एक रचनाकार के हृदय में उठ रही भावनाएँ 'लॉकडाउन' नामक काव्य संग्रह के रूप में आज हमारे समक्ष उपस्थित हैं। वैश्विक आपदा और महामारी के दौर में भावनाओं और संवेदनाओं का शब्दों में सृजन कर रचनाकार ने हमारे समक्ष अनूठा उदाहरण

पेश किया है। पुस्तक के आवरण से यह ज्ञात होता है कि यह कोरोनाकाल में रची गई दुनिया की पहली काव्यकृति है। नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने इस पुस्तक के लिए शुभकामना संदेश लिखा है। वहीं रेल मंत्रालय के महानिदेशक डॉ. आनंद एस. खाती, विख्यात शिक्षाविद प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने भी इसमें शुभाशंसा लिखी है। पुस्तक की भूमिका प्रो. शैलेन्द्र शर्मा, उज्जैन ने लिखी है। इस संग्रह में प्रो. निर्मला एस. मोर्य, डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' तथा प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, लखनऊ ने भी अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी दी है। इस काव्य संकलन में कुल 57 कविताएँ संगृहीत हैं।

इस संग्रह के विषय में डॉ. कैलाश सत्यार्थी लिखते हैं कि- "इनकी कविताओं में हमारे समाज में विकास एवं पहचान तक के हाशिये से बाहर की बहनों, बेटियों और बच्चों की पीढ़ी के साथ-साथ परिवर्तन की आकांक्षाओं व आशा की किरणों का अद्‌भुत सामंजस्य है।"[2] इस कोरोना काल में विश्व मानव के संघर्ष की गाथा हम इन कविताओं में देख सकते हैं। इस संकलन में रचनाकार ने कई विषयों को उठाया है। उनमें कोरोना महामारी, मजदूरों के प्रति संवेदना, लॉकडाउन, गांधी, रामभक्ति और हिंदी भाषा के प्रति प्रेम आदि प्रमुख हैं। 'क्वारंटाइन में' नामक कविता में कवि शुक्ल लिखते हैं कि-

"मेरी रचनाओं में तुम रहोगे
मैं भी तुम्हारे बीच रहूँगा।
तुम भारतीय मजदूर हो,
बहुत अच्छा,
तुम एक इंसान हो
सबसे अच्छा।"[3]

'लॉकडाउन-1' कविता में कवि ने मजदूर की व्यथा व कोरोनाकाल के संघर्षों को वाणी प्रदान करते हुए उस संघर्षरत श्रमिक की आवाज बनने का प्रयास किया है। कवि का कहना है कि 'जान है तभी धर्म है।' इस काल में प्रार्थना व इबादत का तरीका बदल गया है। शासन की कार्यप्रणाली की समीक्षा भी हम इस कविता की पंक्तियों में देख सकते हैं। इसी तरह 'लॉकडाउन-2' कविता में कवि कहता है कि-

"दुनिया में कोरोना
अमेरिका में पचास हजार चढ़ गए
कोरोना की सूली पर
दो मीटर की आपसी दूरी पड़ गई कम
जनता और सरकार के बीच बढ़ी दूरी।"[4]

यह कविता उन मजदूरों की भी आवाज बनती है जो कारोना काल में अपने कर्मस्थल से अपने जन्म स्थल की लंबी यात्रा पैदल करने पर मजूबर हो गए। इन कविताओं में कवि ने मोबलिंचिंग, अभिव्यक्ति की आजादी और महिलाओं की ताकत का भी स्मरण लिया है। कवि 'लॉकडाउन-4' कविता में इस बात पर अपनी चिंता व्यक्त करता है कि आपदा और महामारी के दौर में पक्ष और विपक्षी सरकारों के प्रतिनिधियों को जनकल्याण के लिए एक हो जाना चाहिए, पर ऐसा हो नहीं पाया। केवल टीवी डिबेट में एक-दूसरे को खींचने की अपेक्षा देशवासियों के हित में कुछ करना चाहिए। कवि यहाँ पूछना चाहता है कि-

"प्रजातंत्र में
महामारी और आर्थिक मंदी में
कुछ ने किया
सबसे अधिक मेवा का भोग
जब देश में गरीबी बढ़ रही है
फिर भी
देश में कैसे हो जाते हैं कॉर्पोरेटर
सबसे अमीर लोग?"[5]

कवि अपनी कविताओं के माध्यम से मास्क वितरण, बीमार लोगों के इलाज, अन्न के लिए तरस रहे भूखे लोगों के लिए अनाज की व्यवस्था करने का संदेश देता है। 'ये प्रवासी मजदूर' शीर्षक से रची गई इस संग्रह की कविताएँ कोरोनाकाल में प्रवासी मजदूरों की पीड़ा को दर्शाती है। मनुष्य की संवेदनाएँ जागृत कर उन जरूरतमंदों के हक में हमें कुछ करने का संदेश देती हैं। कोरोना के कारण विश्वभर में हुई मौतों के कारण कवि का दिल दहल जाता है। इटली, स्पेन, बेल्जियम, अमेरिका आदि देशों की दशा पर भी कवि चिंतित है। कवि का स्वप्न है कि—

पढ़ लिखकर सब साक्षर होंगे
न कोई दलित न सवर्ण बनेगा।
देश विकास में बाल युवा सब,
अपनी आहूति, बढ़ कर देगा।"[6]

यहाँ कवि गांधी के सपनों को पूरा करने का संदेश देता है। कवि को लगता है कि 'गांधी का देश फिर से जगा है।' वे यहाँ गांधी, बुद्ध, नानक, मदर टेरेसा का स्मरण कर उनके आदर्शों को अपनाने की बात कहते हैं। वहीं देश की रक्षा कर रहे सैनिकों को प्रणाम करते हुए यह कहना चाहता है कि—

"निहत्थों पर वार कर, कायर ही कहलाओगे।
हाथ में कुदाल लेकर तालाब हम बनायेंगे।
पत्थर तोड़कर उससे नए पथ हम बनाएँ।
विचारधारा के लिए न कभी पत्थर चलाएँ।"[7]

कवि कहना चाहता है कि पहले बीमारी से इंसान को बचाना जरूरी है। आदमी बचा रहेगा तो धर्म भी बचा रहेगा—

"बीमारी (कोरोना) से बचना जरूरी हमें,
हमेशा दो मीटर का रखें फासला
आदमी, आदमी से रखें फासला
नफ़रतों से हमेशा की दूरी रहे।
इलाज कर हमको जो बचाते यहाँ
देवता जान बाजी लगाते यहीं।
सेवा ही हमारा महान कर्म है
आदमी के बिना क्या कोई धर्म है?"[8]

कवि यहाँ मिलजुल कर कोरोना से लड़ने, बीमारी को जड़ से मिटाने, भारत के हर घर में खुशियाँ फैलाने की कामना करता है।

ऐसे ही कवि का एक और चर्चित काव्य संग्रह है— 'प्रवासी का अंतर्द्वंद्व।' इस संग्रह में कवि की कुल 61 कविताएँ संगृहीत हैं। यहाँ कवि को श्रद्धांजलि है तो स्वदेश से लाए चिट्ठी, मेरी बेटी, यूरोप में रोमां बंजारे, वृद्धा की व्यथा और पुत्रों का रोना, वृक्ष जिंदगी भर कुछ देता रहेगा, ओ मेरे बचपन फिर आना जैसी रचनाएँ संगृहीत हैं। इन रचनाओं के द्वारा कवि ने मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

'गाँव में अलाव' विषय पर जाड़े की कविताओं के संकलन में शरद आलोक की कविताएँ भी 'अनुभूति' के वेब पटल पर संगृहीत हैं। अपनी एक कविता में वे लिखते हैं कि—

"उज्ज्वल शीतल/भर जाता है/कौन शिशिर में रंग,
वर्षा की नन्हीं बूँदों को/कोमल कपास-सा
कौन सजाता?/शीतल प्रकाशमय/बोलो उजले घन।
× × ×

268

दु:ख में हमने/न सीखा रिसना,/न शीतों में कंपन।
गीली पलकों से बरसाया/पुष्पों-सा हँस-हँस
मैं हूँ तुहिन कण।
× × ×
अंधियारे में मार्ग दिखाते/दे चंदा को आराम,
और चाँदनी रातें हमसे/चंदा है हैरान।"[9]

दूर देश से आई चिट्ठी कविता में कवि अपने बचपन के दिनों की स्मृतियों की याद करता है। यहाँ कवि छायादार वृक्षों के माध्यम से नीड़ बनाने की बात कहता है। कवि कहता है कि–

किसे स्मरण न आते/अपने बचपने के सपने
पलक झपकते लगते सच्चे/जीवन है।
सपनों को पूरित करने का मन है
न रोक सका है,/न रोक सकेगा।
स्वयं हमें बढ़ना होगा,
चहुँ ओर फैलते सन्नाटे की चीर
नीड पुन: रचना होगा,
छायादार वृक्ष उगाना होगा।
× × ×
भोले-भाले गाँव के लोग/यही सोचते
जो भी छोड़ गया है उनको,
सुखी और हर्षित होगा
उनके नीड़ों के तिनकों की
कोई तो फिर सुधि लेगा।"[10]

कवि भले ही विदेश की धरा पर बसा हो पर वह भारतभूमि और राम को भूल नहीं पाया है। वह रामराज्य की कल्पना अपनी कविता में संजोता है। चाहता है कि सभी के साथ न्याय हो, किसी को भी भूखा न सोना पड़े। नि:शुल्क शिक्षा और चिकित्सा का भाव संजोये कवि मन 'सूरज से कम नहीं उलाहना' कविता में कहता है–

"एक दिन आएगा रामराज्य
एक ही तराजू में तौलना
बाँटकर खाएँगे हम सब,
भूखे पेट कभी नहीं सोना।

शिक्षा चिकित्सा होगी नि:शुल्क
अमीरों से ज्यादा कर लेना
सूरज से कम नहीं उलाहना,
धूप लू को रिश्वत में बाँटना।
कट रहे पेड़ जब यहाँ-वहाँ,
छाया की क्या करें कामना।"[11]

'सरहदों के पार' सुरेश चंद्र शुक्ल शरद आलोक का कहानी संग्रह है। इस संग्रह में 'मदरसे के पीछे', 'वापसी', 'फुटपाथ का किराया', 'विसर्जन', 'चौराहा', 'पटरियाँ', 'सरहदों से दूर', 'मंजिल करीब है', 'अधूरा सफर' आदि कहानियाँ संगृहीत हैं।

संग्रह की 'वापसी' कहानी अपने वतन से प्रेम को दर्शाती है। वहीं विदेश की जमीं पर बसने वाले भारतीयों के हृदय की संवेदनाओं को भी उजागर करती है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि आज की पीढ़ी पर पुरानी पीढ़ी अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है फिर भी आज की आधुनिक युवा पीढ़ी अपनी तरक्की की दौड़ में अपने बुजुर्गों को भूल जाती है और उन्हें बुढ़ापे में वृद्धाश्रम का सहारा लेना पड़ता है। "की फरक पैंदा है? (क्या फरक पड़ता है?) बुढ़ापे का क्या भरोसा। जब बच्चे भी अपने कहने में नहीं हैं। भला हो यहाँ की सरकार का जिसने यहाँ वृद्धाश्रम बनाए हैं, जहाँ हम लोगों को आसानी से जगह मिल जाएगी।' रामशरण ने अचानक हँसते हुए आगे कहा, 'तब आसी बिना दाँतों के छड़ी लेकर साथ घूमेंगे और जीवन की कीमती घड़ियों को याद करेंगे।' तुम ठीक कहते हो रामशरण। हमारा भी एक दिन वही हाल होगा जो यहाँ के बुजुर्गों का होता है। अकेले, बिल्कुल अकेले। अपनों से अलग।"[12] रामशरण जो इस कहानी का पात्र है आज स्वदेश लौट रहा है। वह सभी परिवारजनों के लिए कुछ न कुछ उपहार ले जाता है। अपने हृदय में उसके अपनों के लिए विशेष स्थान है। विदेश की धरा पर दो चीजें उसके साथ होती हैं- एक तो कविता और दूसरी अपनों की स्मृतियाँ। वह कहता है-

"आए इतनी दूर विदेश,
अच्छा लगता अपना देश।
पत्रों कहना यह संदेश
सूना लगता है परदेश।
अपने घर के कटें क्लेश
धनी बनेगा अपना देश
नहीं चाकरी यहाँ करेंगे जिएँ मरेंगे अपने देश।"[13]

इस प्रकार रचनाकार ने अपनी अन्य कहानियों में विभिन्न विषयों को उठाया है। 'मदरसे के पीछे' कहानी में लेखक ने अफगानिस्तान की पृष्ठभूमि को आधार बनाया है। यह कहानी मुस्लिम समाज व्यवस्था के यथार्थ को उद्घाटित करती है। ईराक देश को आधार बनाकर 'सरहदों से दूर' कहानी रची गई है। वहीं 'आदर्श का ढिंढोरा' कहानी दो अलग-अलग संस्कृतियों को आधार बनाकर लिखी गई है। माँ की ममता को हम 'दुनिया छोटी है' कहानी में महसूस कर सकते हैं। 'अधूरा सफर' उस हर एक यात्री को अपनी कहानी लगती है जिसने भारतीय रेल में कभी यात्रा की है। लेखक की कर्मभूमि अभी नार्वे है अत: नार्वे को आधार बनाकर 'मंजिल के करीब' कहानी लिखी है। इस प्रकार रचनाकार ने अपनी कहानियों के माध्यम से देश-विदेश के जीवन के विभिन्न मुद्दों को उठाया है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि नार्वे की धरा पर बसने वाले इस रचनाकार के हृदय में भारत और यहाँ की संस्कृति और हिंदी भाषा बसती है। समय-समय पर उनकी भारत यात्रा और भारत देश में हो रही ऑनलाइन संगोष्ठियों में आपका जुड़ाव इस बात को दर्शाता है कि भारत का रचनाकार किसी भी देश में चला जाए उसके दिल में सदैव हिंदुस्तान धड़कता है। रचनाकार की कलम सदैव गतिमान रहे, देश, समाज और संपूर्ण विश्व के लिए कुछ श्रेष्ठ रचना करती रहे, ऐसी कामना के साथ अपनी बात को विराम देता हूँ।

संदर्भ सूची:

1. डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल शरद आलोक से आलेख लेखक का संवाद।
2. सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक': लॉकडाउन, आर.के. पब्लिकेशन, मुंबई, 2020, पृ. 7
3. वही, पृ. 40
4. वही, पृ. 44
5. वही, पृ. 48
6. वही, पृ. 65
7. वही, पृ. 73
8. वही, पृ. 83
9. http://www.anubhuti-hindi.org/sankalan/gaanv_me_alaav/sets/jan15.htm
10. http://www.anubhuti-hindi.org/dishantar/scshukla/doordesh.htm

बीरसेन जागासिंह से डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा की बातचीत

विमलेश कान्ति वर्मा

मॉरीशस एक लघु भारत है-बीरसेन जागा सिंह :

(गिरमिटिया वंशज 74 वर्षीय डॉ. बीरसेन जागा सिंह की गणना मॉरीशस के उन प्रतिबद्ध हिंदी सेवी साहित्यकारों में होती है जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन हिंदी सेवा के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने 'मॉरीशस के हिंदी साहित्य' पर अनुसंधान कर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, मॉरीशस के विश्वविद्यालय में दीर्घ काल तक हिंदी का अध्यापन किया, वसंत और झिलमिल पत्रिकाओं का संपादन किया और विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं में विविध पदों पर रहते हुए देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी हिंदी सेवाओं के लिए भारत सरकार ने अमेरिका में हुए विश्व हिंदी सम्मेलन में उन्हें प्रतिष्ठित 'विश्व हिंदी सम्मान' से सम्मानित भी किया।

प्रश्न- आपका मॉरीशस से क्या संबंध है? आप मॉरीशस से कैसे और कब से जुड़े हुए हैं? अपने परिवार के बारे में थोड़ा विस्तार से बताएँ। क्या आपके पूर्वज मॉरीशस गिरमिट प्रथा के अंतर्गत आए थे? कब आए थे, कैसे आए थे, कहाँ से आए थे?

उत्तर- मेरा जन्म ही मॉरीशस में 20 मार्च 1946 में हुआ था! मॉरीशस मेरी मातृभूमि है। मॉरीशस से मेरा संबंध माँ-बेटे का है। मॉरीशसीय नागरिक हूँ अत: जन्म से मॉरीशस से मेरा संबंध है! भारत, भारतीयता, भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता, भारतीय इतिहास, संस्कृत, हिंदी एवं हिंदू धर्म से रक्त का संबंध होने के कारण मेरे भारत से अत्याधिक अपनत्व, लगाव, श्रद्धा एवं प्रेम होने के कारण भारत भी मेरी मातृभूमि मॉरीशस से किसी भी दृष्टि से कम नहीं है! यह बात दूसरी है कि जन्म मेरा मॉरीशस में ही हुआ था!

मेरे परिवार की जड़ तो मेरे परदादा बुद्धिमान सिंह नाम के भारतीय गिरमिटिया थी। उनके पुत्र मेरे दादा देवलगन सिंह थे। दादा जी के दो पुत्र हुए-गणेश और देवलाल,